किसी सजन के घर कीर्तन की

ड्यूटी-योग्यता-युक्ति

(सेवा-भाव)

(भाग-3)

सतयुग दर्शन ट्रस्ट (रजिस्टर्ड)

किसी सजन के घर कीर्तन की

ड्यूटी-योग्यता-युक्ति

(सेवा-भाव)

(भाग-3)

सतयुग दर्शन ट्रस्ट (रजिस्टर्ड)
'वसुन्धरा'
निकट गाँव भोपानी,
भोपानी - लालपुर रोड, फरीदाबाद

प्राक्कथन

युग-युग में कुदरती ग्रन्थ आते हैं, जिनमें कुदरत के सत्य का वर्णन होता है और उस वर्णित सत्य को ग्रहण करना मनुष्य जीवन-काल में अति आवश्यक होता है। यहां विडम्बना यह है कि इन ग्रन्थों में वर्णित सत्य को कोई विरला ही समझ व धारण कर पाता है और फिर वह असत्यता में विचरते हुए सजनों को सत्य के संग की प्रवृत्ति में ढालने का सत्संग द्वारा यत्न करता है, ताकि अधिकाधिक सजन सत्वगुणी अर्थात् उत्तम प्रकृति वाले बनें। सत्संग में फिर अध्यात्म-सम्बन्धी चर्चा होती है। इस प्रकार समाज में ऐसी धार्मिक सभा का गठन होता है और उस सभा में आने वाला हर सजन सत्संगी अर्थात् अच्छी संगति में रहने वाला कहलाता है और वह सब से मेल-जोल रखने वाला माना जाता है।

सत्संग एक प्रकार से सजनों का संग साथ है और सत्संग द्वारा ही आत्मतत्व अर्थात् जीवन शक्ति का सत्य रूप से ज्ञान होता है। जो सजन प्रकृति का वह गुण जो अच्छे कामों की ओर प्रवृत्त करता है, उसे धारण कर लेता है तो वह सत्वगुण की प्रधानता के कारण सत्यवान, दृढ़ संकल्प वाला, सदाचारी, धीर, धर्मशास्त्र का ज्ञाता, धर्म करने वाला, धार्मिक शिक्षा देने वाला, पुण्य-कार्य करने वाला, मर्यादा-पुरुषोत्तम कहलाता है। यही श्रेष्ठ गुण-धारी फिर धर्म अधिकारी न्यायाधीश की भांति सत्संग में आने वाले हर सजन की परख कर उसमें निहित सत्य का सरलता व स्पष्टता से बोध कराते हुए सत्संगियों के मन में उस सत्य ज्ञान की उत्तमता जता उसके प्रति उन्हें उमंगित व उत्साहित करता है।

उपरिलिखित उद्देश्य-पूर्ति के लिए सत्संग व्यवस्था का प्रबन्ध सुचारु रूप से बनाए रखने के लिए एक ऐसे विधान की आवश्यकता होती है जो सत्संग के सभी सदस्यों को भली प्रकार से कार्य अथवा आचरण करने के लिए बाध्य करे ताकि हर सजन आदेश पालन की योग्यता से भरपूर हो और उस सजन को मान-अपमान, वड-छोट, अमीरी-गरीबी का भेद-भाव न छू पाए या प्रभावित न कर पाए क्योंकि केवल इसी प्रकार ही सत्संग में समभाव-समदृष्टि और एकता का वातावरण पनप सकता है और बना रह सकता है। इसीलिए इस पुस्तक की

रचना आवश्यक समझी गई ताकि हर सभा संचालक का प्रयत्न फलीभूत हो और कलयुगी-जीवों का उद्धार हो सके। उनके हृदय में भी प्रकाश-किरण ज्योति-पुंज हो उठे और वे इसी जीवन में समवृत्ति एवं समदृष्टि बन इस मनुष्य चोले का भरपूर आनन्द और सुख मान सकें।

इस सन्दर्भ में सेवा-भाव का महत्व देखते हुए सत्संग की सत्संगियों द्वारा हर प्रकार की सेवा का वर्णन कर उनको उस सेवा के लिए योग्यता और युक्ति के प्रति जागरूक बनाए रखने के लिए प्रयास किया गया है। इसीलिए अब हर सजन का कर्तव्य हो जाता है कि वह इस पुस्तक में लिखित विधान का गंभीरता और निर्भयता से पालन करता हुआ, सत्संग में आने वाले हर सत्संगी को आत्मिक उन्नति प्रदान करने के लिए "मैं" को त्याग कर, सहनशील बन निष्काम-भाव से अपनी योग्यता अनुसार सेवा करे ताकि हर मन, परिवार और कुल संसार में शांति का साम्राज्य स्थापित हो। **यही सतयुग है, क्योंकि :**

सतवस्तु में विचार ते सतजबान होसी,
एक दृष्टि एकता महान होसी,
न जप, न तप, न भजन, न बन्दगी,
एक अवस्था ओ जगत जहान होसी।

जिससे हर सजन अपनी असलियत की पहचान कर, जेहड़ा मन-मन्दिर प्रकाश है ओही असलियत ज्योति-स्वरूप मेरा अपना आप, पर खड़ा हो एक निगाह एक दृष्टि और एक दर्शन पर परिपक्वता से ठहर जड़-चेतन में, उसी एक दर्शन का आभास कर सजन-भाव में गुढ़ सकेगा। **याद रखो:-**

असलियत स्वरूप है जे ब्रह्म
जैंदा रूप रेखा नहीं रंग।
ईश्वर है अपना आप प्रकाश
ईश्वर है जे अजपा जाप।
विचार ईश्वर आप नूं मान
विचार ईश्वर आप नूं ही मान।

अनुक्रमणिका

क्रमांक	ड्यूटी का विषय	पृष्ठांक
1.	कीर्तन - सामान्य नीति	1-3
2.	कीर्तन वाले दिन घर का वातावरण कैसा हो?	4
3.	बिछाई	5
4.	द्वारे से शास्त्र की सवारी कीर्तन वाले घर ले जाना	6-7
5.	सभा में मौन-व्रत देखना व सजनों को अनुशासित ढंग में रखना	8
6.	विधि करना व कीर्तन बोलना	9-10
7.	साज (हारमोनियम, ढोलक व रोड़ा) बजाना	11
8.	खजाने का रख-रखाव	12
9.	शास्त्र पढ़ना	13
10.	प्रशाद बनाना	14
11.	भोग लगवाना	15
12.	आरती	16
13.	प्रशाद बाँटना	17
14.	बिछाई समेटना	18

कीर्तन - सामान्य नीति 1

कोई भी सजन कीर्तन, विवाह-शादी के अवसर पर व गृह प्रवेश के अवसर पर अपने घर आज्ञा व प्रशाद लेकर करवा सकता है, जिसमें सत्संग के अन्य सजन भी जा सकते हैं। जिस सजन ने अपने घर कीर्तन रखवाना हो उसको चाहिए कि वह मंगलवार व रविवार को सत्संग पर जाकर अपने घर कीर्तन रखवाने की आवाज देते हुए सब सजनों को आमंत्रित करे और अपने घर का पता व रास्ता नोट करवा दे, जिससे आने वाले सजनों को कठिनाई का सामना न करना पड़े। वह सजन आने वाले सजनों के लिए बस या अन्य किसी वाहन का प्रबन्ध करेगा। सजनों की सुविधा के प्रबन्ध के लिए उसको चाहिए कि वह अपने घर के पास किसी मुख्य स्थान के आगे रास्ता समझाने के लिए चूने से लाईन लगा दे या कोई अन्य निशानी, चिन्ह लगा दे। वह बेनामी सजन जो नित्य प्रति नियम से सत्संग में आता हो, ग्रन्थ व द्वारे के प्रति उसकी व उसके परिवार वालों की असीम-श्रद्धा हो तथा साथ ही प्रेमी भी हो, वह भी सतवस्तु के कुदरती ग्रंथ का प्रकाश यानि कीर्तन अपने घर निर्धारित अवसर पर करवा सकता है।

याद रहे :

1. **किसी सजन के घर कीर्तन का आरम्भ समय - दोपहर दो बजे तथा समाप्ति सांय पाँच बजे होगी।**
2. **द्वारे पर से शास्त्र की सवारी लाने व वापिस ले जाने का प्रबन्ध जिन सजनों के घर कीर्तन है, उन सजनों ने करना है। ध्यान रहे ग्रन्थ द्वारे से ही जाएगा।**

सवारी के साथ कीर्तन पर पहुँचने वाले सजनों को बस या रिक्शा का दोनों तरफ का किराया देने का इंतज़ाम, जिन सजनों के घर कीर्तन है, उन सजनों ने करना है। इसके लिए सभा चलाने वाले एक सजन को निश्चित कर देना है, जो संगत के सजनों को कीर्तन वाले स्थान तक पहुँचने का किराया देगा।

कीर्तन आरम्भ होने से पूर्व ही आवश्यक प्रयोग होने वाली सामग्री का इंतजाम जिस घर में कीर्तन होता है उन सजनों ने करके रखना है। यह सूची इस प्रकार है :

धूप, आरती के लिए काँसे की थाली, देसी घी, रूई, हार, कीर्तन के दौरान सजनों को देने के लिए मिश्री इलायची, आवश्यकतानुसार प्रशाद के लिए सूजी व देसी घी इसके अलावा जो भी ड्यूटी वाला सजन आवश्यक सामान घर वाले सजनों को बताए वह भी कीर्तन शुरू होने से पहले ही घर के सजनों ने मंगवा कर रखना है।

कीर्तन समाप्ति पर आरती से पूर्व शास्त्र पर रुमाला चढ़ाने के लिए घर वाले सजनों ने बिछाई करने वाले सजनों से एक रूमाला हैसियत अनुसार लेकर चढ़ाना है रुमाला कितने का लेना है, यह कीर्तन से पहले ही निश्चित कर लेना है। जो सजन अपना रूमाला आप बना कर चढ़ाना चाहे, वह इस प्रकार बनाया रुमाला भी शास्त्र पर चढ़ा सकता है अन्यथा जिस हिसाब से सजन दहेज-वरी बनाए उसी हैसियत अनुसार सभा संचालक से रूमाला लेकर चढ़ाए। रुमाले के साथ इन सजनों ने फल, बर्फ़ी और शास्त्र पर रूमाले के साथ चढ़ाने के लिए हार का भी इंतजाम करके रखना है। ड्यूटी वाले सजन ने रुमाला चढ़ जाने के पश्चात् रूमाला चढ़ाने वाले सजन की झोली में बर्फ़ी के प्रशाद की कुछ टुकड़ियाँ व फल डालना है और इस खुशी के अवसर पर इसमें से कुछ प्रशाद घर के अन्य मिलने वाले सजनों को भी दे सकते हैं।

संगत को पानी पिलाने, उनके जोड़ों का सही सुरक्षित स्थान का प्रबंध करने व माईक इत्यादि का प्रबंध करने का कार्यभार भी घर वाले सजनों को ही व्यवस्थित करके रखना है।

जो भी सजन घर में कीर्तन रखवायें उन्होंने अवसर के अनुरूप मालिक के प्यारे सजनों के लिए एक कुर्त्ता पाज़ामा और सूट (अच्छी क्वालटी का) भी लेकर रखना है और कीर्तन समाप्ति के पश्चात् किसी योग्य सुपात्र को दे देना है।

नोट :

1. कीर्तन सजन किसी भी दिन (मंगलवार को छोड़कर) अपने घर रखवा सकते हैं। इतवार को यदि किसी सजन के घर कीर्तन रखा गया है तो उस दिन वहाँ पर सत्संग की समस्त नीतियाँ स्त्री सजन ही करेंगी।

2. इतवार के सत्संग की नीति द्वारे पर निश्चित ड्यूटी वाले दो चार पुरुष सजन मिलकर सुबह सवारी ले जाने से पहले ही कर लें।

3. सत्संग सतवस्तु के 'सत्संग की विधियाँ' वाली पुस्तक में वर्णित नीति के अनुसार ही करना है।

4. शादी के कीर्तन पर बधाई नहीं बोलनी। शादी के बाद जब लड़के व लड़की को दरबार में मत्था टिकाने के लिए लाया जावे तो उस समय बधाई बोलनी है।

कीर्तन वाले दिन घर का वातावरण कैसा हो?

2

जिस सजन के घर में कीर्तन होना है, उस सजन के घर के किसी सदस्य व बाहर वाले किसी सजन ने उस दिन मीट, अण्डा, शराब, सिगरेट आदि का सेवन नहीं करना। हर प्रकार से पूर्ण पवित्रता बनाए रखनी है और घर का वातावरण पूर्णतया शांत बना रहे। कोई सजन भी कीर्तन के दौरान या कीर्तन वाले दिन आपस में निंदा, झूठ, क्रोध आदि न करें। घर के सभी सदस्य कीर्तन में प्रसन्नता से भाग लें।

बिछाई 3

योग्यता

(1) प्रौढ़ अवस्था या उससे बड़ी उम्र का सजन (2) नामी हो (3) गाना पहना हुआ हो (4) ड्यूटी के प्रति ज्ञान हो (5) ठहराव हो (6) विचारवान (7) इच्छुक (8) प्रेमी व श्रद्धावान (9) सादा पहरेवा (10) स्वस्थता (शारीरिक व मानसिक दोनों) (11) स्वच्छता (अन्दरूनी ख्याल, संकल्प व दृष्टि की तथा बैहरूनी शारीरिक व रैहणी-बैहणी की दोनों) (12) नीतिवान जो परमार्थ समझता हो।

युक्ति

इस कार्य के लिए जिन्हें सत्संग की नीतियों का पूरा ज्ञान है, वह दो सजन ही बिछाई करने जाएंगे। बिछाई कीर्तन वाले दिन सुबह कीर्तन शुरू होने से कुछ घंटे पूर्व उनके घर जाकर करनी है। बिछाई से पूर्व उन्होंने प्रार्थना, चरण-शरण और सात बार-'साडा है सजन राम, राम है कुल जहान' मन में करना है। बिछाई सिर ढक के, अति प्रेम पूर्वक ध्यान-स्थिर होकर नाम-अक्षर चलाते हुए मौनव्रत धार कर करनी है। किसी किस्म का उतावलापन या क्रोध आदि का स्वभाव नहीं दिखाना ताकि कीर्तन रखवाने वाले के परिवार जनों पर भी अच्छा प्रभाव पड़े और वे भी उनकी रैहणी-बैहणी और बोल-चाल से सीख लें। याद रहे कि इन सजनों ने बिछाई के लिए रुमाले, साज इत्यादि द्वारे से ही गिन कर ले जाने हैं और अन्य आवश्यक सामान की लिस्ट पहले से ही कीर्तन रखवाने वाले सजन को दे देनी है ताकि बिछाई में कठिनाई या देरी न हो। कीर्तन के दौरान कीर्तन रखवाने वाले सजनों के घर का वातावरण कैसा हो यह पहले से ही घर वाले सजनों को समझा देना है और अगर वे कोई मजबूरी दिखलाएं तो उसके घर कीर्तन नहीं रखना।

द्वारे से शास्त्र की सवारी कीर्तन वाले घर ले जाना

4

योग्यता

(1) शास्त्र के प्रति श्रद्धावान सजन (2) अगर सवारी किसी स्त्री ने ले जानी है तो वह मासिक धर्म निवृत्त हो (3) प्रेमी हो।

युक्ति

कीर्तन करवाने वाले के घर के दो सजन सिर पर गुलानारी रंग के दुपट्टे कर द्वारे से सवारी अपने घर बड़े आदर के साथ प्रेमपूर्वक लेने जाएंगे। चूँकि कीर्तन दो बजे शुरू होना होता है इसीलिए सवारी घर से द्वारे तक पहुँचने और फिर सवारी लेकर आने के समय को देखते हुए निश्चित समय से पूर्व ही उठायी जानी चाहिए। ताकि समयनुसार कीर्तन आरम्भ हो सके। अगर घर नज़दीक हो तो सवारी सजन ने सीस पर रखकर पैदल ले जानी है और यदि घर दूर हो तो वाहन पर ले जानी है और फिर घर से कुछ दूरी पर उतरकर सवारी सीस पर रख लेनी है। सवारी प्रार्थना, चरण-शरण करके और पाँच जयकारे लगाकर उठानी है। एक सजन शास्त्र सीस पर धारण कर आगे चलेगा और पीछे दूसरा सजन कीर्तन वाली पुस्तकों को सीस पर धारण कर हाथ में चंवर ले, शास्त्र पर सारे रास्ते चंवर झुलाते हुए उसके पीछे धीरे-धीरे विश्रामपूर्वक आगे यह शब्द कहते हुए बढ़ेगा :

"चलो चलिए सजन महाबीर जी दे पास दासियाँ रल चलिए...."

पीछे पीछे सारी संगत सवारी की चरण धूल लेते हुए यही कीर्तन साथ में बोलते हुए चलेगी। सवारी वाले दोनों सजन नंगे-पाँव होगें और अन्य सभी भी नंगे पाँव ही हों तो अच्छा है। घर के द्वार पर पहुँचकर घर वाले सजनों ने सवारी की अगवानी खुशी-खुशी 'आओ जी जी आया नूं' बोलते हुए करनी है और उस पर जयमाला डालकर फिर से पाँच जयकारे लगाकर सवारी यथास्थान

आगे ले जानी है। यथास्थान सवारी को विराजमान करते हुए साथ में यह बोलते रहना है :

जय सीता राम - जय सीता राम - जय सीता राम बोल.....

फिर ड्यूटी वाले सजन ने शास्त्र की सवारी लाने वाले सजन के हाथ में विधिनुसार चंवर दे कर ग्रन्थ के आगे बैठने को कहना है और साथ में उसे निति अनुसार शास्त्र पर चंवर झुलाते रहने को भी कहना है। चंवर झुलाने वाले सजन ने स्टेज पर बैठ शास्त्र का प्रकाश करना है और मन में बड़े प्रेम से 'नाम अक्षर' चलाते रहना है।

सभा में मौनव्रत देखना व सजनों को अनुशासित ढंग में रखना 5

योग्यता

(1) पाँच प्यारों में से एक (2) स्वच्छता (दोनों अन्दरूनी संकल्प, ख्याल दृष्टि और जिव्हा की व बैहरूनी शारीरिक तथा रैहणी-बैहणी की) (3) ठहराव हो (4) कर्तव्यपारायण यानि अनथक हो (5) शांतिप्रिय (6) धैर्यवान (7) मुँह मुलाजा न रखने वाला (8) समवृत्ति यानि सजनता व समभाव (9) निडर और साहसी हो (10) सचेत और जागरूक (11) नम्र, मधुरभाषी (12) निष्पक्ष (13) सादगी प्रिय (14) प्रेमी।

युक्ति

यह कार्य उसने आँखें खोल कर, सतर्कता से चारों तरफ दृष्टि रख के करना है। ध्यान रखना है कि हर सजन पंक्तिबद्ध मौनव्रत में बैठे। यहाँ मौनव्रत का अर्थ है केवल वही बोलना है जो स्टेज से कीर्तन आदि बोला जाए। अन्य कोई बातचीत नहीं करनी। कोई लाचारी की बात हो तो सजन इतने धीरे से करें कि तीसरा सजन न सुन पाये। ध्यान रखे कि सजन हिले जुले और ठैं-ठैं नहीं करे। मौनव्रत धारे रहें-चूँ चाँ न करें।

कहीं शोर या किसी बच्चे आदि का रोना हो तो उन्हें हाथ जोड़ कर शांत अवस्था में ले आना है और बच्चे वाली को थोड़ी देर के लिए उठकर बाहर जाने को कह देना है। इसी सजन ने ही यह ध्यान रखना है कि हर सजन कीर्तन का उतर प्रेम से दें, कोई सोए नहीं। भीड़ व धक्का न हो। हर आने जाने वाले पर नज़र रखनी है कि कोई मान-हानि न हो। जो देर से आएं उन सजनों को पीछे ही बैठाना है। इस बात का ध्यान रखना है कि सब सजन आँखें बंद कर के बैठें।

विधि करना व कीर्तन बोलना 6

योग्यता

(1) नामी, प्रेमी व श्रद्धावान (2) शब्द उच्चारण स्पष्ट व शुद्ध हो (3) सुरों का ठीक ज्ञान हो (4) आवाज़ सुरीली व मीठी हो (5) शब्दों के साथ जुड़ कर-बोल सकता हो (6) उसे विधि पूरी ज़बानी कठंस्थ हो (7) 'हौं'-'मैं' से रहित (8) धैर्यवान, शांतिप्रिय हो (9) सादगी प्रिय (10) स्वच्छता (दोनों अन्दरूनी - जिव्हा की, ख्याल, संकल्प व दृष्टि की तथा बैहरूनी - शारीरिक व रैहणी-बैहणी की हो) (11) गृहस्थ आश्रम में ठीक विचरता हो (12) शुद्ध आचरण वाला।

युक्ति

विधि व कीर्तन बोलने वाले सजन ने सिर ढक कर विधि बोलनी आरम्भ करनी है। विधि व कीर्तन बोलते समय सजन के चेहरे पर मुस्कराहट होवे। संगत को भी कहना है पीछे से मुस्कुराहट से ही उत्तर देवे। इस तरह सारी सभा में प्रसन्नता का वातावरण बनेगा। यह सीख सब सजनों ने लेनी है और मुस्कराहट का स्वभाव अपनाए रखना है। विधि या कीर्तन बोलते समय बोले जाने वाले शब्दों के भावों को समझते हुए जो उसमें वर्णित है, उसका अपने अन्दर अनुभव करते हुए बोलना है। बोलते समय ऐसा प्रतीत हो जैसे बोलने वाला सजन वैसा समक्ष देख रहा है और संगत के सजनों को बता रहा है। कुदरती शास्त्र के एक एक शब्द को बोलते समय उच्चारण शुद्ध और स्पष्ट हो ताकि सुनने वालों को उन शब्दों द्वारा बताए जाने वाले ज्ञान की सूक्ष्मता समझ में आए। बोलते समय सभा को निरन्तर जागरूक व उत्साहित रखना है। ताकि उनके अन्दर प्रेम उमड़े - उछाले मारे और जिस प्राप्ति के लिए वे सत्संग में आते हैं उनको मिल जाए। कीर्तन बोलते समय कोई भी शब्द अपनी तरफ से नहीं जोड़ना। लय की गति सत्संग के प्रेम-भाव को समझते हुए ऊपर-नीचे ले जानी है। कीर्तन आरम्भ होने से पहले ही जो-जो उस दिन बोलना है, पुस्तक में निशानी रख लेनी है ताकि कीर्तन एक पल के लिए भी न रुके। यह

निरन्तरता बनाए रखने के लिए अति आवश्यक है, क्योंकि कीर्तन रुकने का अर्थ है सजनों की वृत्ति रुक जाना, जो हानिकारक साबित होती है। कीर्तन तन्मयता से बोलना है। स्टेज पर बैठकर कोई आपसी बातचीत व इशारे नहीं करने। विधि करने वाले को चाहिए कि वह पहले से ही साज अर्थात् ढोलक, हारमोनियम आदि बजाने वालों के साथ बोलने का अभ्यास कर ले ताकि साज का ताल-मेल टूटने से सजनों के प्रेम की तार न टूटे। याद रहे कीर्तन केवल शास्त्र में से ही बोलने हैं, और यह भी ध्यान रहे कि सत्संग के दौरान संगत विश्राम में रहे। विधि करने वाले सजन ने विधि की पुस्तक सामने रख कर विधिनुसार ही विधि करनी है।

साज (हारमोनियम, ढोलक व रोड़ा) बजाना 7

योग्यता

(1) साज बजाने में अनुभवी हो (2) नामी, प्रेमी व श्रद्धावान (3) सुरों का ठीक ज्ञान हो (4) शब्दों के साथ जुड़कर साज बजा सकता हो (5) शुद्ध स्पष्ट शब्द उच्चारण हो (6) 'हौं'-'मैं' से रहित (7) स्वस्थ (8) धैर्यवान, शांतिप्रिय (9) स्वच्छ (10) सादगी प्रिय।

युक्ति

बाजा बजाने वाले सजन ने आवाज़ और सुर का तालमेल एकरस रखना है ताकि एक-एक शब्द संगत को स्पष्टता से सुनाई दे। ढोलक की ताल का तालमेल स्टेज़ से उच्चरित हो रहे शब्दों व लय से मेल खाना अत्यन्त आवश्यक है, इसके लिए ढोलक वाले सजन का ध्यान स्थिर बना रहे और स्टेज से उच्चरित लय उसके मस्तिष्क में गूँजती हुई ढोलक पर ताल दे। इस क्रिया को सक्रियता से निभाने के लिए, ढोलक वाला सजन आँखे बंद करके निभाने में सक्षम हो तो अच्छा है, वरना आँखें खोलकर स्टेज पर बोलने वाले सजन की तरफ देख सकता है। स्टेज से बुलने वाले हर शब्द का उत्तर उसी लय में देने से इस क्रिया में और भी गति बन सकती है। यहाँ यह याद रहे शब्द-उच्चारण हर सजन को ठीक प्रकार से समझ में आए। इसके लिए साज नर्म रखना है और रोड़ा न ही बजाएं तो अच्छा है।

खजाने का रख-रखाव 8

योग्यता

(1) पाँच प्यारों में से तीन सजन (2) द्वारे की चाल को समझते हों (3) नामी सजन, गाना पहने हुए (4) निष्ठावान, धर्मपरायण (5) ईमानदार (6) सच्चाई पर परिपक्व हों (7) सचेत, सजग व जागरूक (8) समझदार (9) मितव्ययी।

युक्ति

मालिक के प्यारों की अमानत में ख्यानत नहीं होनी चाहिए। तीन नामी सजन जिन्हें खजाने की ड्यूटी मिली हुई हो उन में से एक, सजग, सचेत और सावधान होकर ग्रंथ के पास नीचे थाली के आगे बैठे। थाली में पैसा ज्यादा हो जाए तो सजन थाली के पैसे गुत्थी में डालता जाए और गुत्थी सत्संग समाप्ति तक संभाल कर रखे। सत्संग की समाप्ति पर खजाने वाले सजन खजाना गिन कर उसे द्वारे पर जाकर कापी में नोट कर लें।

तीन ड्यूटी वाले सजनों में से एक के पास खज़ाने का हिसाब हो, दूसरे के पास चाबी व तीसरे के पास पैसा होगा।

थाली के खज़ाने में से सजनों को पैसे नहीं तुड़वा कर देने क्योंकि कोई किसी भावना से माथा टेकता है, कोई किसी भावना से। यह सावधानी अत्यन्त आवश्यक है।

शास्त्र पढ़ना 9

योग्यता

(1) नामी (2) प्रेमी व श्रद्धावान (3) मासिक धर्म से निवृत्त (4) सादगी प्रिय (5) स्वच्छता (अन्दरूनी - ख्याल, दृष्टि, जिव्हा व संकल्प की एवं बैहरूनी - शारीरिक व रैहणी-बैहणी की) (6) धैर्यवान, शांतिप्रिय।

युक्ति

पहले "धन मेरे सजन श्री शहनशाह हनुमान जी महाराज सच्चेपातशाह जी" दो बार बोलना है फिर शास्त्र में से अवसर अनुसार प्रसंग पढ़ना है। पढ़ने में एक रसता हो। बड़े प्रेम में आकर ध्यान स्थिर होकर अफुर अवस्था में ठहरे रहना है। अनुभव यह करना है कि महाराज जी हृदय में विराजमान है। ख्याल इसी अनुभव में ठहरा रहे। शब्द उच्चारण स्पष्ट और शुद्ध हो।

शास्त्र पढ़ने की समाप्ति पर शास्त्र पढ़ने वाले सजन ने "सरस्वती कंचन होवे" - बोलना है और साथ ही साथ रुमाले से प्रकाशित शास्त्र को ढक देना है।

प्रशाद बनाना 10

योग्यता

(1) प्रशाद बनाने में अनुभवी सजन (2) नामी हो, संतोषी हो (3) शुद्ध आचरण वाला हो या हलवाई सजन - पर इसके पास उपरोक्त योग्यता वाला सजन खड़ा होवे।

युक्ति

सत्संग में आए हर सजन को चाय और दो दो बिस्कुट सत्संग समाप्ति से कुछ देर पहले अर्थात् चुप की धुन्नि समाप्त होते ही दे देनी है। कीर्तन की समाप्ति पर सजनों को देसी घी से बने हलवे का प्रशाद देना है। अन्य कुछ नहीं देना। यह प्रशाद सजन घर में भी बना सकते है या फिर हलवाई से भी बनवा सकते हैं। प्रशाद बनवाते समय घर का एक सजन पास में खड़ा होकर नाम अक्षर चलाता रहेगा और मौनव्रत धारे रहेगा या प्रशाद बनाने वाला सजन खुद प्रार्थना कर, नाम-अक्षर चलाते हुए शांति से प्रशाद बनाएगा। कीर्तन की समाप्ति पर संगत को प्रशाद बाँटने के पश्चात् घर वाले सजन यह प्रशाद अपने परिवार जनों और मोहल्ले वालो को दे सकते हैं।

प्रशाद बनवाते समय संगत का एक सजन प्रशाद बनाने वाले सजन के पास खड़ा होकर प्रशाद बनवाएगा और यह निगरानी रखेगा कि प्रशाद बनाने वाले सजन प्रशाद में केवल देसी घी का ही प्रयोग करें।

भोग लगवाना 11

योग्यता

(1) नामी (2) गाना पहने हुए (3) आद् से कंचन (4) मासिक धर्म से निवृत्त (5) निष्कामी हो तो ठीक है नहीं तो - उच्च वृत्ति वाला सजन।

युक्ति

शास्त्र पढ़े जाने के पश्चात् जब 'सरस्वती कंचन होवे' बुल जाए तो निर्धारित संगत के सजन ने प्रार्थना, चरण-शरण करके हनुमान जी का संग कर, इष्ट का ध्यान करके ख्याल से उन्हें यह भोग लगाना है।

"भोग लवावां महाबीर रघुनाथ जी नूँ, सीद प्रसाद दास नूं बक्षो, शान्ति अपने नाम दा, आप दे घर विचों, आप ही लवा रहे हो, आप ही खा रहे हो, मैं तूं, जगत तूं, आप ही आप हो"।

यदि भोग लगाने वाले की वृत्ति चरणों तक पहुँचेगी तो ही प्रशाद को भोग लगेगा।

भोग आँखे बंद करके हाथ जोड़ कर सीधे बैठ कर लगाना है।

आरती 12

योग्यता

घर का एक सजन।

युक्ति

काँसे की थाली में चाँदी की कटोरी रख या आटे की कटोरी बना देसी घी डालकर रूई की वट बनाकर आरती, घर का एक सजन ग्रंथ पर रुमाला चढ़ाने के पश्चात् करेगा। आरती की थाली दोनों हाथों से पकड़ बड़े प्रेम-पूर्वक धीरे-धीरे बायें से दायें घुमाते हुए स्पष्टता से बोलते हुए करनी है। 'आरती रघुवंशमणि जी की', उनका ध्यान लगा कर करनी है। याद रहे कि बैहरूनी वृत्ति में आरती उपरिलिखित ढंग से हो रही हो पर अन्दरूनी वृत्ति में आरती ख्याल अपने इष्ट के सामने कर रहा हो। बाकी-के-सजन उसके साथ आरती बालेंगे।

प्रशाद बाँटना 13

योग्यता

(1) संगत का सजन हो (2) समवृत्ति वाला हो (3) शांतिप्रिय हो (4) धैर्यवान हो (5) प्रसन्नचित्त (6) स्वस्थ हो (7) स्वच्छ (अन्दरूनी व बैहरूनी वृत्ति से) (8) मधुरभाषी हो (9) ठहराव वाला हो।

युक्ति

प्रशाद सब सजनों को एकरस देना है। प्रशाद बाँटते समय संगत में पूर्णतया विश्राम होवे । प्रशाद पीछे से बाटँना शुरू करना है, ताकि खलबली न होवे। किसी को थोड़ा या किसी को ज़्यादा प्रशाद नहीं देना। संगत के सजनों को चाय पिलाने, बिस्कुट देने व प्रशाद बाँटने की सेवा संगत के सजन ही करेंगे।

बिछाई समेटना 14

योग्यता

बिछाई करने वाले दो सजन ही बिछाई समेटेंगे।

युक्ति

कीर्तन की समाप्ति पर जो सजन बिछाई करेंगे वे सजन ही बिछाई को समेटने व उसका यथास्थान पहुँचाने का ठीक प्रबन्ध करेंगे। बिछाई जिस प्रेम व श्रद्धा भाव से की जाए उसी प्रेम व श्रद्धा भाव से समेटनी है। सारा सामान गिन कर अच्छी तरह तह कर लेना है। बिछाई समेटते समय आपस में बातें नहीं करनी अपितु वैसे ही मौन धारे रहना है। बिछाई समेटने के पश्चात् जिस घर में कीर्तन हो उस घर के सजनों को सवारी और बिछाई को यथास्थान पहुँचाने का प्रबन्ध करने को कहना है।